

शम्भु (Shambhu)

Dr. Waseem Siddiqi
डा० वसीम सिद्दीकी
10/8Th Road North
Ahmadi.61008
Kuwait

मजीद अपनी द्वाेटा सड़क पर दौड़ा रहा था शुरु में तो उसकी कार सड़क पर फिसलती रहती थी लेकिन वह अब रह-रह कर झिटके खा रही थी वजह यह थी कि अब कच्ची सड़क शुरु हो गयी थी। जिस पर बैल गाड़ी और ट्रेक्टर के पहियों ने बड़े बड़े गड्ढे बना दिये थे और मजीद को द्वाेटा के साथ अपने भी अन्जर पन्जर ढीले नज़र आने लगे थे वह मुसलसल तीन घन्टे से ड्राइविंग कर रहा था वह शहर से एक बजे दिन को चला था और इस वक्त चार बज रहे थे और अब उसे चाय की ज़रूरत महसूस होने लगी थी लेकिन सड़क के चारों तरफ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ धूल और सन्नाटे के सिवा कुछ न मिला था थोड़ी देर बाद उसे सड़क के दोनों तरफ कच्चे कच्चे मकानात नज़र आये और एक छोटा सा छप्पर का टी स्टाल। टी स्टाल पर उसने गाड़ी रोक दी और गाड़ी से सर निकाल कर चाय के लिये कहा वह गाड़ी ही में बैठा रहा था बाहर काफी धूल उड़ रही थी चाय वाले से पूछने पर पता चला कि यह जगह भीष्म पुर कहलाती है। उसकी द्वाेटा ने वहाँ कोई खास हलचल नहीं मचाई थी। वहाँ के लोग इस तरह की कारें देखने के आदी थे वजह यह थी कि वहाँ से तकरीबन 80 किलोमीटर पर हिंडाला गाँव के पास पहाड़ों के गारों में बनी हुई हजारों साल पुरानी तस्वीरें टोरेस्ट के लिये काफी दिलकशी और जाजेबियत रखती थीं। और अक्सर व बेशतर टोरेस्ट वहाँ से गुज़रते रहते थे।

मजीद जैसे तो एक कामयाब बिजनेस मैन था लेकिन आसार कदीमा से उसे जुनून की हद तक लगाव था और इस लगाव की वजह से वह इस गर्मी में भी वहाँ के लिये निकल पड़ा था मजीद ने चाय के पैसे दिये और अपनी गाड़ी स्टार्ड कर ही रहा था कि उसने देखा आगे खड़ी हुई बस मे से पहले तो एक गठरी गिरी फिर बूढ़ा आदमी इतनी तेज़ी से निकला जैसे अन्दर से किसी ने उसे धक्का दिया हो बस जा चुकी थी और वह बुड़्ढा अब अपनी गठरी पर बैठ कर हाँपने लगा था।

कोई किसान या मज़दूर लगता है मजीद ने सोचा और कार से उतर कर उसके पास पहुँच गया वह बुड़्ढा उसे बताने लगा कि बस का कन्डेक्टर उससे इस गठरी का टिकट भी बनवाने को कह रहा था उसने इन्कार किया तो उसे गठरी समेत बस के बाहर धक्का मार कर निकाल दिया।

क्या नाम है तुम्हारा— तुम्हें कहाँ जाना है— मजीद ने उससे पूछा।

अरे भईया हिन्डाला जाना था वहाँ प्राइमरी स्कूल में मास्टर था अब तो रिटायर हुये भी ज़माना हो गया मुझे सब मास्टर श्याम लाल कहते हैं। एक मास्टर का इतना बुरा हशर अब मजीद को उन्हें तुमसे मुख़ातिब करने पर भी शर्मिन्दगी हुई। वह बोला आप हमारे साथ हिन्डाला चलिये मैं भी वहीं जा रहा हूँ उसन डिग्गी खोल कर मास्टर श्याम लाल की गठरी रखी फिर उन्हें अपने पास बिठा कर गाड़ी स्टार्ड कर दी वह सोचने लगा बताइये टीचर जो मुआशरे का इतना अहम फ़र्द होता है वह आज इस तरह ज़लील किया जाता है और प्राइमरी स्कूल के रिटायर टीचर के पास इतने भी पैसे नहीं होते कि वह ऐसा लिबास पहन सके जो कम अज़ कम धूल से अटे हुये एक मज़दूर से मुख़तलिफ़ हो वह कन्डेक्टर आप से ज़्यादा पैसा क्यों माँग रहा था मजीद ने मास्टर श्याम लाल से पूछा।

क्या बताऊँ बेटा यह हिन्डाला की आखिरी बस थी उसके बाद अब रात में डाकुओं के खतरे की वजह से बस चलती नहीं इसलिये यह सब जितना मुँह में आये पैसा माँग लिया करते हैं। कोई रोकने टोकने वाला नहीं यह डाकुओं का खतरा कैसा मजीद अब कुछ खौफ ज़दा हुआ।

वह क्या कहते हैं यहाँ से 30-35 किलोमीटर बाद मैलों का इलाका शुरू हो जाता है। वहाँ मीलों तक जंगल ही जंगल हैं और वहीं अक्सर व बेशतर डाके पड़ते रहते हैं यही वहज है कि रात में बस चलना बन्द हो गयी है। बड़े खतरनाक डाकू हैं पुलिस तक उनसे डरती है मास्टर श्याम लाल बोले चले जा रहे थे और मजीद का हाथ अब स्टेरिंग पर काँपने लगा था उसे किसी ने डाकुओं के बारे में नहीं बताया था वरना वह तन्हा सफ़र की हिम्मत ही नहीं करता। उस ने सोचा अब भी मौका गुनीमत है लौट जाये लेकिन यह मास्टर साहब क्या समझेंगे कि बिल्कुल ही बुज़दिल है वह अल्लाह का नाम लेकर एकसीलेटर दबाये रहा थोड़ी देर बाद गाड़ी तीस किलोमीटर आगे बढ़ चुकी थी। सूरज अब तकरीबन गुरुब होना चाहता था और वही हुआ जिसका खतरा था सड़क पर एक दम एक दरख्त की डाल टूट कर गिर पड़ी और मजीद को ब्रेक लगानी पड़ गयी। धम-धम आठ दस आदमी आस-पास के दरख्तों से कूद पड़े और उन्होंने गाड़ी को घेर लिया सब ही के हाथों में बन्दूकें थीं मजीद की घिग्गी बन्ध गयी। कार के नज़दीक खड़े गोरीले नुमा डाकू ने मजीद की कमर पर बन्दूक की नली से ढकल कर कहा चलो—

कहाँ हम लोगों को ले जा रहे हो, मास्टर श्याम लाल ने थर-थराती हुई आवाज़ में पूछा।

सरदार के पास एक डाकू ने जवाब दिया था दूसरे डाकू ने कहा तुम लोग बहुत भाग्यवान हो आज हम तुम लोगों को नहीं लूटेंगे और तुम्हारी गाड़ी रुपया पैसा तुम जिसे कहोगे उसे पहुँचा दिया जायेगा। अरे हम लोगों को लेकर कहाँ जा रहे हो— मजीद ने पूछा— भेंट चढ़ाने तुम लोगों को सरदार देवी की बली चढ़ायेंगे। गोरीले नुमा डाकू ने जवाब दिया था।

मजीद सन्नाटे में आ गया। उसके सारे जिसम में ठंडी लहर दौड़ गयी थी। आज 30 नवम्बर है हर साल आज ही के दिन आठ बजे रात को सरदार दो आदमियों को देवी के भेंट करता है एक डाकू कह रहा था फिर उसने दोनों को धक्का दे कर कहा जल्दी चलो देर हो रही है सरदार इन्तिज़ार कर रहा होगा। वह दोनों जंगल में आड़े तिरछे रास्तों से डाकुओं के नरगे में घिरे हुये चले जा रहे थे। दोनों के कदम नहीं उठ रहे थे और हर कदम पर डाकू उन्हें धक्का देकर आगे बढ़ा रहे थे। मजीद के अब आँसू निकलने लगे थे उसे अपनी बीवी बच्चों की याद आने लगी। थोड़ी देर में वह दोनों जंगल के बीचों बीच एक झोपड़ी के सामने पहुँचा दिये गये। वहाँ एक नौजवान डाकू पास बने हुये चबुतरे पर बैठा हुआ था और उसके पास ही एक साधु बैठा था।

सरदार देखो कितनी जल्दी देवी के लिये भेंट ले आये गोरीला नुमा डाकू ने कहा जियो लाल चन्द्र जुग-जुग जियो। चबुतरे पर बैठा हुआ डाकुओं का सरदार खड़ा हो गया था। उसके हाथ में मशीन गन थी सांझा जी आप तैयारी शुरू कीजिये सरदार ने बुड़ढ़े साधु से कहा मास्टर श्याम लाल और मजीद को अब चबुतरे के बीचों बीच बिठा दिया गया। अन्धेरा काफी हो चुका था उनके चेहरे अब साफ़ नज़र नहीं आ रहे थे। साधु अब चबुतरे से उठ खड़ा हुआ था और कुछ मन्तर जाँपने लगा था। सरदार ने अपनी मशीन गन सीधी कर ली थी। वह देवी का भगत था और साल में इस रोज़ दो आदमियों को देवी की भेंट चढ़ाना उसका मामूल था।

साधु के जाप में अब शिद्दत आने लगी थी और अन्धेरा बढ़ता ही जा रहा था लाल चन्द्र सरदार ने गोरीला नुमा डाकू से कहा ज़रा झोपड़ी से लाल टेन उठा ला भेंट से पहले इन दोनों के दर्शन तो कर लूँ कितने पूज्य हैं। यह लोग जो देवी के भेंट किये जायेंगे लाल चन्द्र अन्दर जा कर लालटेन उठा लाया। सरदार ने लाल टेन ले ली। और दोनों की तरफ़ बढ़ गया वह मजीद के चेहरे के नज़दीक लालटेन ले गया। मजीद का चेहरा बिल्कुल सफ़ेद पढ़ चुका था उसके होंठ हिल रहे थे शायद वह कोई दुआ पढ़ रहा था वाह शाबाश लाल चन्द्र

लगता है तू इसे छाँट कर लाया है कितना तगड़ा है यह कह कर सरदार ने मजीद के शाने पर हाथ मारा और एक मकरूह कहकहा लगाया। अब वह लालटेन मास्टर साहब के चेहरे के करीब लाया था मास्टर साहब आँखें बन्द किये थे चेहरा उनका भी सफेद हो रहा था। यह तो काफ़ी बुड्ढा है सरदार ने मुड़ कर लाल चन्द्र से कहा लेकिन कोई बात नहीं यकायक उसने लालटेन दोबारह मास्टर साहब के चेहरे के बहुत नजदीक कर दी मास्टर साहब सरदार के मुँह से निकला उसके हाथ में लालटेन काँपने लगी थी। अरे हराम जादे तुझे और कोई नहीं मिला था। हमारे मास्टर साहब को ही पकड़ लाये। मास्टर श्याम लाल ने अब आँखें खोल दीं थीं और वह हैरत से डाकूओं के सरदार को देख रहे थे। शायद पहचानने की कोशिश कर रहे थे मास्टर साहब मैं शम्भू हूँ आपका केवल (सिर्फ) एक दिन का शिष्य (शार्गिंद) मास्टर साहब आप को याद है सर वही पाठशाला (स्कूल) में मेरा पाँचवी कक्षा (दरजा) में दाखला हुआ था पहले ही दिन मैं पाठशाला गया था आप ने हमसे कोई प्रश्न (सवाल) पूछा था जो कि मैं नहीं बता पाया था फिर आप ने सन्तियों से मुझको बहुत मारा था और फिर उसके बाद मार के डर से मैं कभी पाठशाला नहीं गया। आपने तो हमारे अच्छे ही के लिये मारा था मास्टर साहब आप ने हमें एक ही रोज पढ़ाया तो क्या हुआ आप हमारे गुरु तो हो गये वह मास्टर के हाथ खोल रहा था।

नहीं सरदार भेंट तो तुम्हें चढ़ानी ही होगी सात जाप पूरे हो गये हैं नहीं तो देवी का प्रकोप पड़ेगा साधु ने उससे कहा नहीं गुरु से बढ़ कर कोई नहीं है उसने मास्टर साहब के दोनों हाथ खोल दिये।

अब वह मजीद के हाथ खोल रहा था नहीं सरदार ऐसा न करो देवी सब का विनाश कर देगी तुम ऐसा नहीं कर सकते उस साधु ने दोबारह कहा।

हाँ सरदार भेंट चढ़ाना ही होगी तुम इस पुरानी रीत को नहीं बदल सकते। अब की लाल चन्द्र बोला था शायद सरदार का नायब वही था।

सरदार भेंट तो आप को चढ़ानी ही चाहिये वरना हम सब नष्ट हो जायेंगे। अब की कोई डाकू एक साथ बोले थे सब ही डाकू बगावत पर आमादा थे।

ठीक है तो फिर रस्म पूरी होगी सरदार ने मशीन गन दोबारह तान ली थी। धाँय-धाँय मजीद और मास्टर श्याम लाल की एक साथ चीख निकली ज़मीन पर दो लाशें तड़प रही थीं। यह लाल चन्द्र और बुड्ढे साधु की लाशें थीं। देखो हमने इस रस्म को कायम रखा और दो आदमी देवी को भेंट कर दिये उसने बाकी डाकूओं की तरफ देखकर कहा।

हाँ सरदार की जय सारे ही डाकूओं ने एक साथ नारा लगाया।

मजीद और मास्टर श्याम लाल वहाँ से वापस आ रहे थे मास्टर श्याम लाल सोच रहे थे कि अपने 35 साल के मास्टरी के कैरियर में उन्होंने हज़ारों बच्चों की पिटाई की थी यह भी उन्हीं में से एक होगा वह शम्भू को पहचान नहीं पाये थे वह सोच रहे थे कि अगर उन्होंने इस बच्चे को उसके स्कूल के पहले ही रोज इतना न मारा होता तो उसने स्कूल न छोड़ा होता और हो सकता है वह इस मुआशरे का आज मुहज़ब और कार आमद रूक्न होता उन्होंने उसे डाकू बनाया अब तक उसने जितने डाके डाले हैं जितने कत्ल किये हैं इसके जिम्मेदार वह हैं। शम्भू कातिल नहीं है वह कातिल हैं— शम्भू डाकू नहीं है वह डाकू हैं शम्भू मुझे माफ़ कर दो मेरे दच्चे मास्टर श्याम लाल फूट फूट कर रोने लगे।

.....☆.....